Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
VOL- VIII ISSUE- VII JULY 2021 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.149 ISSN 2349-638x

पालि साहित्य में सामाजिक चेतना

प्रा. डॉ. बंडू एस. मानवतकर,
पालि विभाग मधुकरराव पवार
कला महाविद्यालय, मुर्तिजापूर

जिस तेजस्वी व्यक्तीत्व से संसार ने सबसे पहले मुनष्यता सिखी, जिसकी दिप्ती से भारत के निश्चयात्मक इतिहास पर सर्वप्रथम आलोक पडा उशी से पालि - साहित्य का भी उदय हुआ। तथागत की सम्यक सम्बोधिही पालि-साहित्यका आधार है. जिस दिन सिद्धार्थ गौतम ने बुद्धत्व को प्राप्त किया उस दिन से लेकर जिस दिन उन्होने महापरिनिर्वाण में प्रवेश किया उसके बीच उन्होंने जो प्रवचन किया, देसना दी, जिस किसी के संदर्भ मे कहा, जहाँ कहा जिस किसीको कहा उसी का संग्रह कुछ समय बाद संगीती लेकर भिक्खू संघने उसी का संग्रह पालि तिपिटक में किया।

आज हम जो पालि साहित्य देखते है। पालि साहित्य का अध्ययन करते, अध्यापन करते है। सब वह बुद्ध वचन के रुप में संग्रहीत हमारे सामने है। बुद्ध की शिक्षा का मुख्य उदेदश मनूष्य है। इस लिए बुद्ध की शिक्षा मनुष्य केन्द्रीत है। मनुष्य से संबंधीत और मनुष्य के लिए ही है। बुद्ध की शिक्षा का उद्देश है, मनुष्य को सुंदर और सुखी बनाना, मनुष्य को सभी प्रकारके संकटो से दु:खो से मुक्त करणा इसलिए बुद्ध की शिक्षा कि मुल प्रेरणा है। मनुष्यकी आंतरिक प्रेरणा, आंतरीक चेतना को जगाना भगवान बुद्ध ने संसार के मानव समाज को यह उपदेश दिया '**अत्त** दिप भव'[1] अर्थात अपना दिप आप स्वयंम बनो, अपना प्रकाश आप बनो इस संयुक्त निकाय के महावग्ग कें अन्तदिप सुत्त मे हम आत्मनिर्भार होने उपदेश पाते है, जिसकी पुनरावृत्ति भगवान ने अनेक स्थलों पर की है। असी प्रकार उन्होने यह भी कहा 'अत्ता ही अत्तनों नाथो कोही नाथो परोसिया'[2] अर्थात मनुष्य स्वयं अपना स्वामी दुसरा कोन स्वामी हो सकता है, दुसरा कोई स्वामी नही है। प्रत्येक व्यक्ती स्वयं अपना स्वामी है। उसका दुसरा स्वमी अन्य कोई नही है। इसलिए मनुष्य स्वयं ही अपने विकारों को नष्ट कर सकता है, वह अपने कुशल, विशुद्ध आचरण, कुशल कर्म और मुलमुक्त होकर अपना कल्याण कर सरता है।

तथागत बुद्ध ने संयुक्त निकाय में जो उपदेश दिया है, वह इस दृष्टीसे बहुत ही महत्वपुर्ण है। 'विसुद्धिमग्ग' के पहले परिच्छेद शील-निर्देश के निदान कथा में संयुक्त निकाय की दो गाथा आयी है - जो की बुद्ध के सामने प्रश्न उपस्थित हुआ था। एक समय भगवान श्रावस्ती के जेतवन महाविहार मे विहार करते थे। एख दिन रात्रि के समय किसी देवपुत्र ने भगवान के पास आकर प्रश्न किया वह गाथा इस प्रकार है।

"अन्तो जता बही जता जताय जतिता पजा।
तं तं गोतम पुच्छमि को इमं विजय्ये जतंति॥[3]

इसका मतलब है व्यक्ती के जीवन के भीतर भी उलझने है और बाहार भी सारा संसार इन उलझनो में उलझी हुई है। इसलिए है गोतम मै आपसे पुछता हु कि ऐसा कोन व्यक्ती है जो इन उलझनो को नष्ट कर सकता है ? इसका उन्तर भी वे स्वयं ही देते है।

"सीले पतिथाय नरो सपञ्ञो, चित्तं पञ्ञञ्च भावयं।
आतापी निपको भिक्खु, सो इमं विजटये जतंग॥[4]

अर्थात जो व्यक्ती शील से संपन्न है प्रज्ञावान है अपने मन और प्राज्ञा की भावना करने वाला है उद्योगी है वही भिक्खु इन उलझनों को समुल नष्ठ कर सकता है। मतलब शील सदाचार के व्दारा प्रज्ञा के व्दारा, अपने मन को संयमित करके, प्रयत्नशील होकर ही हर व्यक्ती अपने दु:खो को नष्ट करके जीवन में सुख को प्राप्त कर सकता है। इस तरह पालि - साहित्य में आज के समाज के सामनें च्युनौतियोकों हल करने का रास्ता है। इसीसे समाज में शांती और सहअस्तित्व की चेतना पैदा कर सकते है।

बुद्ध मानव समाज को शील, सदाचार, नैतिकता मानव कल्याण सभी जीव प्राणीयों के प्रति प्रेम संयम, दया मित्रता, करुणा, सहयोग, सेवा की शिक्षा देता है। पाली साहित्य में धम्मपद ग्रंथमे सभी गाथाये सामाजिक चेतना से भरी पडी है। धम्मपद के बुद्धवग्ग की एक गाथा में कहा गया है।

"सब्ब पापस्स अकरणं, कुसलस्स उपसम्पदा।
सचित परियो दपणं, एतं बुद्धानं सासन" ॥[5]

मतलब जो भी पापमय अर्थात अकुशल है, उसे नही करना चाहिए। जो भी कुशल है उसको प्राप्त करना चाहिए। अपने चित्त को संयमित रखना चाहिए यही बुद्ध का शासन है।

उसी प्रकार मनुष्य ने कैसे जिवन यापन करना चाहिये उस संदर्भ में 'धम्मपद' के ही अप्पमाद-वग्ग' में कहा गया है।

"अप्पमादों अमतपदं, पमादो मच्चुनों पदं।
अप्पमत्ता न मियान्ती, ये पमत्ता यथा मथा॥[6]

इस गाथा का अर्थ इस तरह है - अप्रमाद अमरित का पद है। प्रमाद मरण की अवस्था है अप्रमादी कभी मारते नही लेकीन प्रमादी लोग मरे हुऐ के समान है। भगवान बुद्ध की यह अप्रमादी होने की शिक्षा मानवी संस्कृती और सभ्यता के विकास के लिए बहुत ही मूल्यवान है। मनुष्य के अहित का कारण उसके दु:ख का कारण, उसके विनाश का कारण प्रमादी होना ही है। प्रमाद से मनुष्य अंधा बन जाता है, प्रमाद से दुक्ख भोगता है, दुसरों का अहित करता है। इसलिए प्रमाद को समाप्त किए बगैर कोई भी व्यक्ती सुखी नही हो सकता है।

समाज में जो भी अंधविश्वास, कर्मकांड प्रचारीत किया गया था। उस अंधकारसे बाहार निकालने के लिए थेरी पुण्णीका ने थेरिगाथा ग्रंथ में गंगा जल से शुद्धी मानने वाले एक ब्राम्हण को वास्तविक विशुद्धी के मार्ग में कैसे पहुँचा दिया। पुण्णीका थेरी गाथासे पता चलता है। पुण्णीका सेठ अनाथपिण्डिक के घर की दासी की पुत्री की । बुद्ध से पूर्व भारत में दास प्रथा का जन्म हो चुका था दासोको किसीभी प्रकार के मानवीय अधिकार नही होते थे। एक तरह से उनको मनुष्य नही समजा जाता था । अनाथपिण्डिंक के परिवार पर बुद्ध का प्रभाव था। अनाथपिण्डक के घर भोजन दान के लिए आते थे और उपदेश देते थे, जिसके कारण उनके घर परिवार के सभी लोगों को बुद्ध का उपदेश सुनने का अवसर प्राप्त होता था। पुण्णिका भी चोरी - छिपे बुद्ध का उपदेश सुनती थी। उपदेश सुनते - सुनते उसे भी ज्ञान प्राप्त हूआ वह बुद्ध के ज्ञान प्राप्ती से पुण्णीका के उद्गारीत गाथा से समझ लेगे वह कहती है, पाणी में डुबकी लगाने वाले ब्राम्हण से-

"उदहारी अहं सीते, सदा उदकमोतरि।
अय्यानं दण्डभयभीता वाचादोस भट्टिता" ॥[7]

इस गाथा का अर्थ ऐसा है। पुण्णिका कहती है। मै पनहारिन थी सदा पाणी भरनाही मेरा काम था। स्वामिनीयों के दण्ड के भय से, उनकी क्रोध भरी गालियों से पिडीत होकर, मुझे कडी सर्दी में भी सदा पाणी में उतरणा पडता था। दुसरी गाथा मे फिर ब्राम्हण से कहती है।-

"कस्स बामणं त्वं भीतो, सदा उदकमोतरि।
वेधमाने हि गत्तेहि, सीतं वेदयसे भुसं॥[8]

वह पुण्णीका कहती है अरे ब्राम्ह तूझे किसका डर है, किसके डर से भयभीत होकर यह कडी सर्दी में गहरी नदी में थंडे पाणी में उतरकर अपने कॉपते हूए

शरीर से सर्दी की कठीण पीडा को सहता है - फिर ब्राम्हण पुण्णीका से कहता है —

"जानन्ती च तुवं भोति, पुण्णिके परिपुच्छसि।
करोन्तं कुसलं कम्प, रुधन्तं कतपापकं" ॥[9]

अर्थात हे पुण्णीके । तू जानती है फिर भी मुझसे कारण पुच्छती है, पाप कर्म के फल को नष्ट करने के लिऐ । यह कुशल कर्म करता हू, पुण्णीका किस तरह ब्राम्हण को बताती है।---

"यो च वुड्ढो दहरो वा, पापकम्मं पकुब्बति।
दंकाभिसेचना सोपि, पापकम्मा पमुच्चति" ॥[10]

अर्थात युवा या वृद्ध मनुष्य कोई भी पाप कर्म करता है वह गंगा में डुबकी लगाकर स्नान करणे से पाप मुक्त होता है। पुण्णीका उस ब्राम्हण से कहती है ---

"को नु ते इदमक्खासि, अजानन्तस्स अजानको।
दकाभिसेचना नाम, पापकम्मा पमुच्चति" ॥[11]

गंगा स्नान शुद्धी से पापमुक्ती होतीं है, यह तुझसे किसने कहा? यह तो अज्ञानी मुर्ख व्यक्ती का अज्ञानी मुर्ख व्यक्ती के प्रति उपदेश है। गंगा जल से ही शुद्धी होती तो जल मे रहणे वाले बेडक, मछुए, जल के सर्प, मगर और अन्य जलचरों का स्वर्ग में जाना सुनिश्चित है। यदी गंगा जल स्नान से पाप मुक्ति होती है तो फिर भेड - बकरी, सुअर और मृगों को मारने वाले या उनका मांस बेचने वाले, मछुए, चोर, जल्लाद या अन्य पापी लोग सभी पाप कर्म करने के बाद गंगा जल में स्नान कर, क्या पाप मुक्त नही हो जाऐंगे।

इस तरह हम देखते है। गंगा स्नान से पाप मुक्ती या शुद्धी होती है। ऐसी समाज में मान्यता थी। ब्राम्हण गंगा स्नान से पाप मुक्ती होती है, ऐसा समजता है, पर पुण्णीका किस तरह अनेक उदारहण देकर वह आर्य मार्ग पर लाती है। अर्थात समाज में फैली हूई अनिष्ठ प्रथा, परंम्परा, धार्मीक अंधता को दूर करने के लिए और लोगों कि सामाजिक चेतना जगाने के लिए ब्राम्हण कों सही रास्ता दिखाती है।

निष्कर्ष -

पाली साहीत्य कें अनेक ग्रंथो में, गाथा ओ में समाज को जागृत करणे के लिए जो समाज कही सालो से दु:ख से पिडीत था। उसे दु:ख से बाहर निकालने के लिए सुत्त और गाथा के माध्यमसे लोगोंमें सामाजिक चेतना जगानेका काम प्राचीन काल मे भी और आधुनिक काल में भी पाली साहित्यने किया है।

संदर्भ सुची -

1) काश्यप भिक्खू जगदिश, संयुक्त निकाय पालि, नवनालंदा महाविहार प्रकाशन, नालंदा.
2) कौसल्यायन भदन्त आनंद, (1996) धम्मपद, बुद्धभुमी प्रकाशन नागपुर, अत्तवग्गो, गाथा नं. 160, पृष्ठ क्र. 40.
3) धर्मक्षित अनुवादक त्रिपीटताचार्य, (2008) विसुद्धिमग्ग भाग 1, सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ क्र. 67.
4) ---------- वही ----------
5) कौसल्यायन भदन्त आनंद, (1996) धम्मपद, बुद्धभूमी प्रकाशन नागपुर, बुद्धवग्गो, गाथा नं. 183, पृष्ठ क्र. 46.
6) -- वही-- अप्पमाद वग्गो, गाथा नं. 21, पृष्ठ क्र. 6
7) विमलकीर्ती, (2003) थेरीगाथा, सम्येक प्रकाशन नई दिल्ली, गाथा क्र. 236, पृष्ठ क्र. 202.
8) -- वही -- गाथा क्र. 237, पृष्ठ क्र. 202.
9) -- वही -- गाथा क्र. 238, पृष्ठ क्र. 203.
10) -- वही -- गाथा क्र. 239, पृष्ठ क्र. 203.
11) -- वही -- गाथा क्र. 240, पृष्ठ क्र. 203.